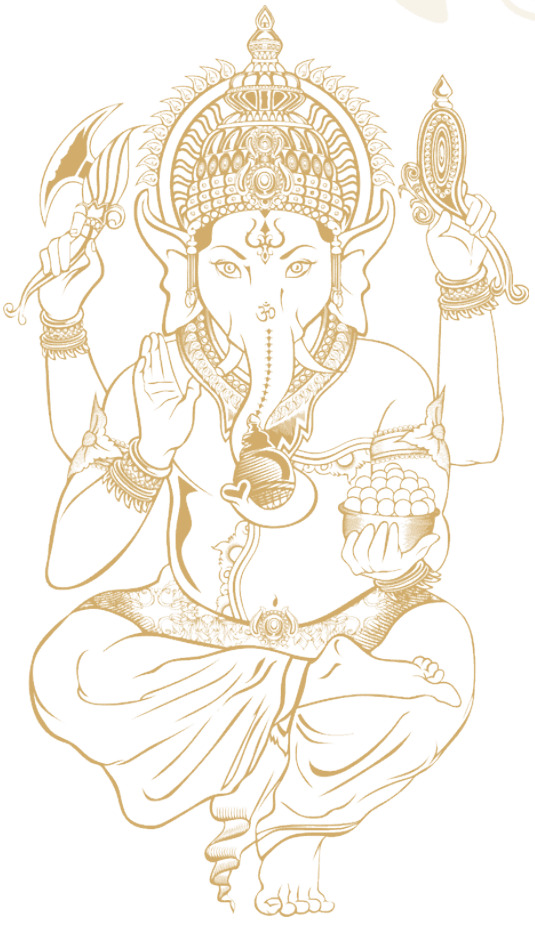

Daksh Prabha

Model: Horoscope-Matching

Order No: 120367801

Model: Horoscope-Matching

Order No: 120367801 Date: 29/11/2025

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
08/09/1998	जन्म तिथि	20/07/1999
मंगलवार	दिन	मंगलवार
घंटे 13:35:00	जन्म समय	08:20:00 घंटे
घटी 18:49:03	जन्म समय(घटी)	06:48:10 घटी
India	देश	India
Gurgaon	स्थान	Gurgaon
28:27:00 उत्तर	अक्षांश	28:27:00 उत्तर
77:01:00 पूर्व	रेखांश	77:01:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:56	स्थानिक संस्कार	-00:21:56 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:03:22	सूर्योदय	05:36:43
18:35:32	सूर्यास्त	19:19:22
23:50:11	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:51

वृश्चिक	लग्न	सिंह
मंगल	लग्न लग्नाधिपति	सूर्य
मीन	राशि	तुला
गुरु	राशि-स्वामी	शुक्र
रेवती	नक्षत्र	चित्रा
बुध	नक्षत्र स्वामी	मंगल
1	चरण	3
गण्ड	योग	सिद्ध
वणिज	करण	विष्टि
दे-देवांशु	जन्म नामाक्षर	रा-राखी
कन्या	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क
विप्र	वर्ण	शूद्र
जलचर	वश्य	मानव
गज	योनि	व्याघ्र
देव	गण	राक्षस
अन्त्य	नाड़ी	मध्य
सर्प	वर्ग	मृग

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
बुध 15वर्ष 11मा 25दि		28:49:08	वृश्चि	लग्न	सिंह	07:10:59	मंगल 3वर्ष 4मा 12दि	
शुक्र		21:38:29	सिंह	सूर्य	कर्क	03:08:02	गुरु	
03/09/2021		17:27:39	मीन	चंद्र	तुला	00:15:16	30/11/2020	
03/09/2041		17:59:53	कर्क	मंगल	तुला	11:55:39	30/11/2036	
शुक्र	03/01/2025	06:35:18	सिंह	बुध व	कर्क	13:40:35	गुरु	18/01/2023
सूर्य	03/01/2026	00:14:55	मीन व	गुरु	मेष	09:05:28	शनि	31/07/2025
चन्द्र	04/09/2027	08:03:09	सिंह	शुक्र	सिंह	09:29:39	बुध	06/11/2027
मंगल	03/11/2028	09:18:52	मेष व	शनि	मेष	21:54:06	केतु	12/10/2028
राहु	04/11/2031	07:37:21	सिंह व	राहु व	कर्क	19:14:05	शुक्र	13/06/2031
गुरु	05/07/2034	07:37:21	कुंभ व	केतु व	मक	19:14:05	सूर्य	31/03/2032
शनि	03/09/2037	15:36:58	मक व	हर्ष व	मक	21:41:43	चन्द्र	31/07/2033
बुध	04/07/2040	05:50:22	मक व	नेप व	मक	09:17:53	मंगल	07/07/2034
केतु	03/09/2041	11:36:27	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	14:07:35	राहु	30/11/2036

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:50:11 चित्रपक्षीय अयनांश 23:50:51

लग्न-चलित

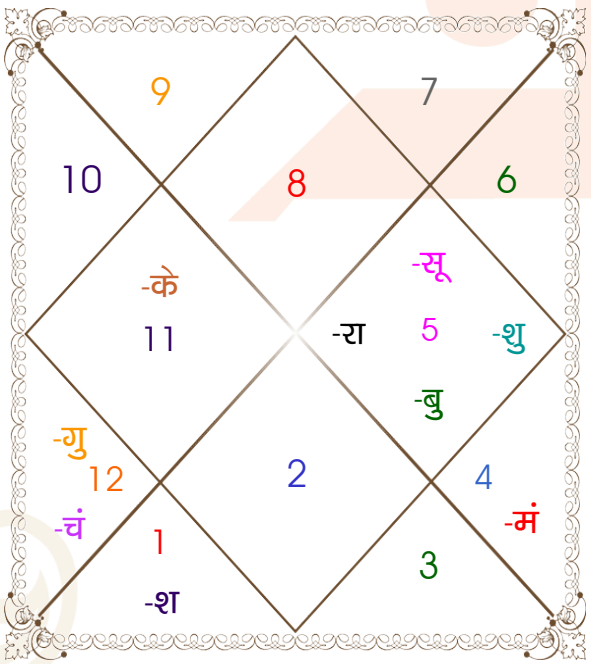

लग्न-चलित

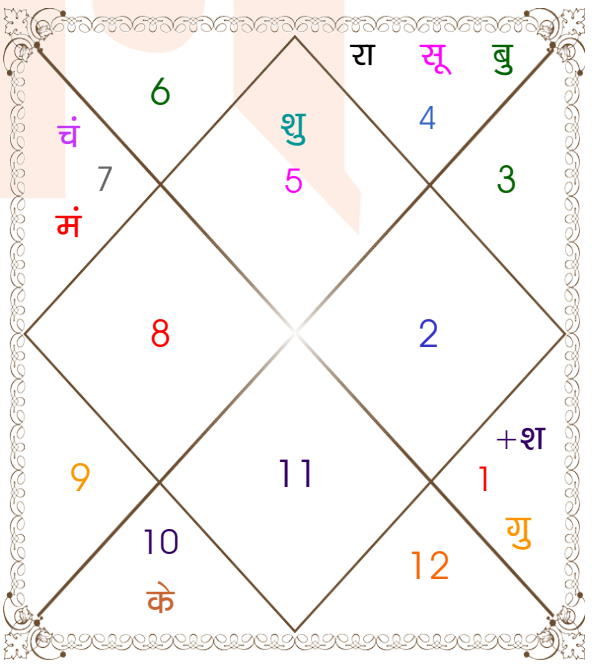

भक्ति शक्ति ज्योतिष केंद्र
पं गोकुल चंद शर्मा
मकान नं-389, सेक्टर 17A, गुरुग्राम, हरियाणा
9312257830

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गज	व्याघ्र	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	शुक्र	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	मीन	तुला	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	14.00		

कुल : **14 / 36**

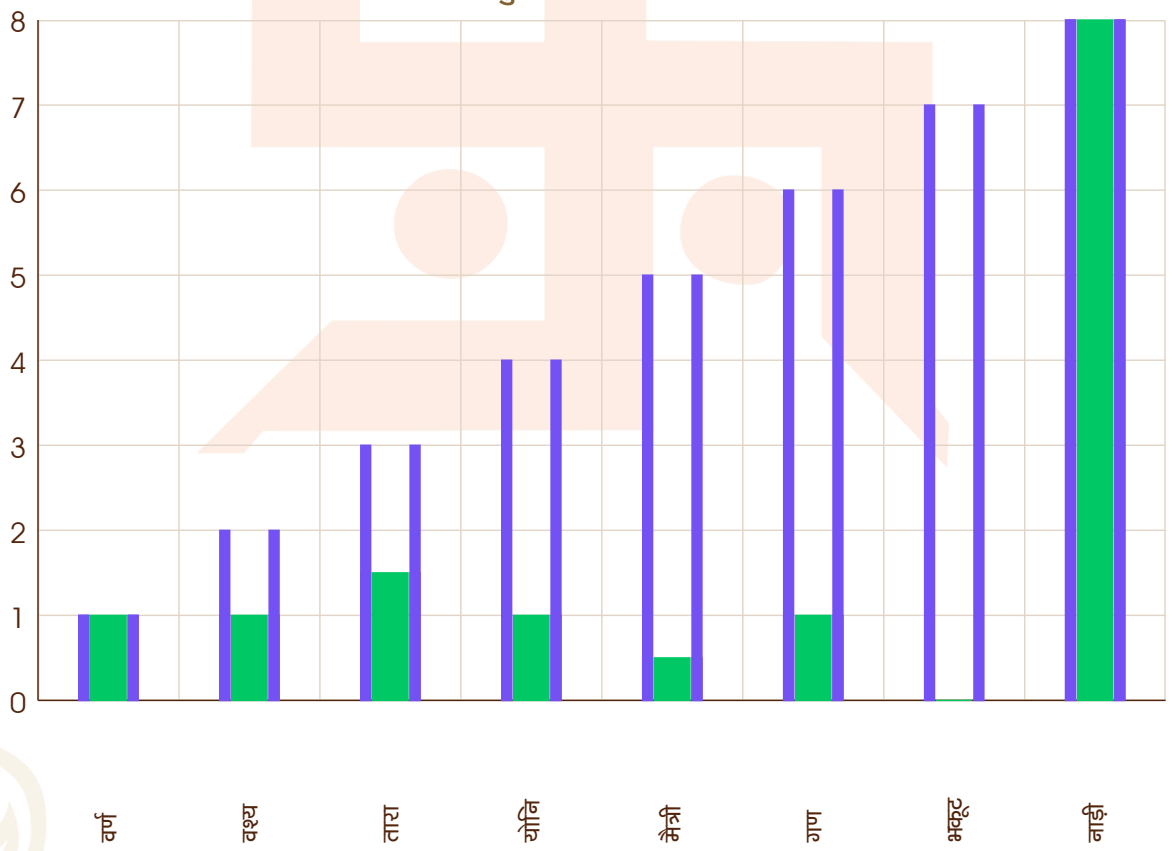

भक्ति शक्ति ज्योतिष केंद्र
पं गोकुल चंद शर्मा
मकान नं-389, सेक्टर 17A, गुरुग्राम, हरियाणा
9312257830

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।

Daksh का वर्ग सर्प है तथा Prabha का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Daksh और Prabha का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

Daksh मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

Prabha मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

Daksh तथा Prabha में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Daksh का वर्ण ब्राह्मण तथा Prabha का वर्ण शूद्र है। अतः यह मिलान अति उत्तम है। Prabha सभी को मान एवं प्रतिष्ठा देती है तथा सेवा करती रहेंगी। साथ ही वह सबकी अपेक्षाओं को पूरा करती रहेंगी तथा किसी के भी साथ तर्क-वितर्क नहीं करेंगी। Prabha एक नर्स की भाँति अपने पति एवं बच्चों की सेवा एवं तिमारदारी करती रहेंगी।

वश्य

Daksh का वश्य जलचर है एवं Prabha का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है। जिसके कारण यह मिलान मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जलचर कभी भी मनुष्य के ऊपर नियंत्रण स्थापित नहीं कर सकता। इसके विपरीत, मनुष्य या तो जलचरों पर नियंत्रण कर लेता है अथवा उसे समाप्त कर देता है अथवा उसका भक्षण कर लेता है अथवा उससे दूर भागता है। अतः यदि इन दोनों बीच विवाह सम्पन्न होता है तो यह अनुकूल नहीं रहेगा। इस स्थिति में Prabha अति हावी होती रहेगी तथा हमेशा अपने पति को गुलाम समझती रहेगी तथा चाहेगी कि Daksh उसकी आज्ञा का पालन करे। इससे घर की शांति भंग होगी तथा प्रगति एवं समृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

तारा

Daksh की तारा प्रत्यरि तथा Prabha की तारा साधक है। Daksh की तारा प्रत्यरि होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। विवाह के उपरांत Daksh कालांतर में बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं नैतिक पतन का शिकार हो सकता है। उसके अवैध संबंध भी हो सकते हैं। परिणामस्वरूप Prabha को काफी कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। भविष्य में तनाव, निराशा, अवसाद एवं पीड़ा के कारण उसका झुकाव अध्यात्म की ओर हो सकता है।

योनि

Daksh की योनि गज है तथा Prabha की योनि व्याघ्र है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग- अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना का अभाव ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति

को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Daksh का राशि स्वामी Prabha के राशि स्वामी से शत्रु का संबंध रखता है। जबकि Prabha का राशि स्वामी Daksh के राशि स्वामी के साथ सम रहता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से खराब मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी का राशि स्वामी दूसरे के लिए शत्रु किंतु दूसरा उसे सम मानता हो तो ऐसा कुंडली मिलान अच्छा नहीं माना जाता है। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा, तनाव, मतभेद, एवं बहसबाजी का भाव बना रह सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि यह बहस कभी-कभी हिंसक रूप धारण कर ले। जिससे शारीरिक चोट एवं मुकदमेबाजी के कारण आर्थिक हानि हो सकती है।

गण

Daksh का गण देव तथा Prabha का गण राक्षस है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसी परिस्थिति में Prabha निर्दयी, निष्ठुर एवं क्रूर स्वभाव की हो सकती हैं जो वर, उसके बच्चों तथा परिवार के सदस्यों के लिए बुरा एवं घातक साबित हो सकता है। ऐसी पत्नी से अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह अपने पति, परिवार अथवा सामाजिक दायित्वों का अच्छी प्रकार से निर्वहन करेंगी। Prabha की अक्सर दूसरों से लड़ाई-झगड़ा करना एवं लोगों को उकसाना इसी प्रकार की आदत होगी।

भकूट

Daksh से Prabha की राशि अष्टम भाव में स्थित है तथा Prabha से Daksh की राशि षष्ठम भाव में स्थित है। जिसके कारण यह मिलान बिल्कुल अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें षडाष्टक दोष लग रहा है। इस मिलान को भकूट मिलान में स्वीकृति नहीं प्रदान की जाती है तथा 0 अंक/गुण प्रदान किए जाते हैं। Daksh एवं Prabha दोनों आक्रामक, गुस्सैल एवं झगड़ालू स्वभव के होंगे। Daksh शारीरिक रूप से कमजोर हो सकते हैं, उनके अनेक शत्रु हो सकते हैं तथा अपने व्यवसाय में भी उन्हें जूझना पड़ सकता है। दूसरी ओर Prabha बिल्कुल लापरवाह, कोई भी कर्त्तव्य एवं जिम्मेदारी नहीं निभाने वाली, हरदम स्वयं के स्वार्थपूर्ति में ही खोई रहने वाली होंगी। उन्हें किसी भी प्रकार का वैवाहिक सुख प्राप्त नहीं हो पायेगा तथा उनके पति की मृत्यु की भी संभावना बनी रहेगी।

नाड़ी

Daksh की नाड़ी अन्त्य है तथा Prabha की नाड़ी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। अन्त्य एवं मध्य नाड़ी दो महत्वपूर्ण जीवनी शक्तियों पित्त एवं कफ की कारक हैं।

जिसके कारण दम्पत्ति का परस्पर प्रेम, अनुकूलता, अच्छा भविष्य, सहयोग की भावना बनी रहेगी। आपकी संतान शक्तिशाली, बुद्धिमान, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

Daksh की जन्म राशि जलतत्व युक्त मीन तथा Prabha की राशि वायु तत्व युक्त तुला है। जल एवं वायु तत्व के प्रभाव से इनके मध्य स्वभावगत असमानताएं विद्यमान होंगी जिससे संबंधों में तनाव रहेगा। अतः यह मिलान विशेष अनुकूल नहीं होगा।

Daksh की जन्म राशि का स्वामी बृहस्पति तथा Prabha की राशि का स्वामी शुक्र परस्पर सम एवं शत्रु राशियों में स्थित है। सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए यह स्थिति विशेष अनुकूल नहीं रहेगी इसके प्रभाव से परस्पर संबंधों में कटुता का भाव रहेगा। एक दूसरे के प्रति प्रेम सहानुभूति एवं सहयोग भी अल्प ही होगा जिससे वैवाहिक जीवन में सुख शांति की अल्पता रहेगी। साथ ही सुख दुःख में एक दूसरे को अल्प मात्रा में ही सहयोग प्रदान करेंगे तथा सदगुणों की उपेक्षा करके कमियों पर विशेष ध्यान देंगे। अतः ऐसी प्रवृतियों की इनको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

Daksh और Prabha की राशियां परस्पर अष्टम एवं षष्ठ भाव में पड़ती हैं। शास्त्रानुसार यह भकूट दोष माना जाता है। अतः इनके प्रभाव से उपरोक्त प्रभावों में और भी वृद्धि होगी जिससे संबंधों में अविश्वास तथा स्वार्थ का भाव उत्पन्न होगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम तथा सदभावना में न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त एक दूसरे से श्रेष्ठ समझने की भी प्रवृति विद्य मान रहेगी। अतः सोच समझकर आपस में कार्य कलाप करने चाहिए।

Daksh का वश्य जलचर तथा Prabha का वश्य मानव है। जलचर एवं मानव में नैसर्गिक विषमता होने के कारण Daksh और Prabha की अभिरूचियों में अंतर रहेगा तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी असमानता होगी। जिससे दाम्पत्य संबंधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में असमर्थ होंगे।

Daksh का वर्ण ब्राह्मण तथा Prabha का वर्ण शूद्र है। अतः इनकी कार्य क्षमताओं में भी असमानता होगी। Prabha की प्रवृति धार्मिक एवं शैक्षणिक कार्यो में रहेगी जबकि Prabha की प्रवृति किसी भी कार्य को ईमानदारी तथा परिश्रम पूर्वक करने की होगी। अतः यदा कदा मतभेदों की भी संभावना रहेगी।

धन

Daksh और Prabha दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

Daksh की नाड़ी अन्त्य तथा Prabha की नाड़ी मध्य है। अतः अलग अलग नाड़ियों में उत्पन्न होने के कारण नाड़ी दोष से ये मुक्त रहेंगे। इसके प्रभाव से इनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को परिश्रम एवं पराक्रम से सिद्ध करने में समर्थ होंगे। साथ ही मंगल भी इन दोनों के लिए शुभ ही रहेगा तथा इनके स्वास्थ्य पर इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। अतः इनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। इस प्रकार उत्तम वैवाहिक जीवन के लिए यह मिलान श्रेष्ठ रहेगा।

संतान

संतति के दृष्टि से Daksh एवं Prabha का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उनको उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म के मध्य अंतर भी अनुकूल रहेगा जिससे उनका उचित पालन पोषण करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त इनकी पुत्र एवं कन्या संतति संख्या भी समान होगी।

यद्यपि Prabha का प्रसव सामान्य विधि से सम्पन्न होगा परन्तु इसके प्रति Prabha के मन में कई प्रकार से भय एवं चिन्ता की भावना रहेगी जिससे वे अनावश्यक मानसिक तनाव की अनुभूति करेंगी। अतः Prabha को चाहिए कि ऐसे अनावश्यक भय एवं चिन्ता से मुक्त रहें तथा नियमित रूप से अपना गर्भावस्था में डाक्टरी परीक्षण आदि करवाती रहें। इससे Prabha सामान्य रूप से सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी तथा ऐसे समय में स्वयं भी स्वस्थ तथा शांति की अनुभूति करेंगी। Daksh और Prabha बच्चों से सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा वे भी अपने क्षेत्र में स्व योग्यता बुद्धिमता तथा व्यवहार कुशलता से प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे तथा अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगे माता पिता के प्रति उनके मन में समान भाव से आदर तथा आज्ञाकारिता रहेगी तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Daksh और Prabha का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा आनंद पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Prabha के सास से प्रायः अच्छे संबध रहेंगे। यद्यपि उनकी सास अन्य जनों के मामलों में कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत Prabha के लिए अनुकरणीय हो सकते है। साथ ही इन दोनों के मध्य कोई विशेष समस्या या मतभेद नहीं रहेंगे।

Prabha अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवं सेवा भाव से ससुर को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही ननद एवं देवरों के साथ भी उनके संबध मित्रता पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण सहयोग एवं स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने में सफल रहेंगी।

इस प्रकार Prabha के प्रति उनके सास ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीता से पूर्ण रहेगा तथा घर में उसे पूर्ण सुख सुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

Daksh के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को Daksh अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी Daksh के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण Daksh के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।